Article Date	Headline / Summary	Publication
22 Jun 2026	Not every beauty treatment covers the cost of looking beautiful	Navbharat Times (Hindi)

कॉस्मेटिक और मेडिकल ज़रूरत में फर्क समझें, जानें किन प्रक्रियाओं का खर्च इंश्योरेंस में मिलता है और किनका नही

खूबसूरत दिखने की कीमत हर ब्यूटी ट्रीटमेंट कवर नहीं

प्रीति कुलकर्णी Preeti.Kulkarni@timesofindia.com

*आज के दौर में फिट और आकर्षक दिखने की चाहत लोगों को वजन घटाने वाली दवाओं, लेजर आई सर्जरी, बोटॉक्स (**Botox**) और अन्य कॉस्मेटिक प्रक्रियाओं की ओर खीच रही है। लेकिन इन पर होने वाला लाखों रुपये का खर्च अक्सर हेल्थ इंश्योरेंस के दायरे से बाहर रहता है। इसलिए जानना जरूरी है कि हेल्थ इंश्योरेंस के बावजूद किन प्रक्रियाओं का खर्च खुद उठाना पड़ता है।*

आजकल सिर्फ बीमारी का इलाज ही नहीं, बल्कि बेहतर दिखने और फिट रहने की चाहत पर भी लोग खुलकर खर्च कर रहे हैं। वजन कम करने वाली दवाएं, बोटॉक्स, स्किन टाइटनिंग, लेजर हेयर ट्रीटमेंट, LASIK और SMILE जैसी आंखों की सर्जरी, दांतों की खूबसूरती बढ़ाने वाले इलाज आदि की मांग तेजी से बढ़ रही है। लेकिन इन पर होने वाला खर्च ज्यादातर लोगों को अपनी जेब से उठाना पड़ता है, क्योंकि हेल्थ इंश्योरेंस आमतौर पर इन्हें कवर नहीं करता।

मुंबई के डायबिटोलॉजिस्ट डॉ. राजीव कोविल के मुताबिक, भारत में मोटापा, मेटाबॉलिक हेल्थ और एस्थेटिक मेडिसिन मिलकर एक बड़े 'वेलनेस इकॉनमी' का हिस्सा बन रहे हैं। लोग अब सिर्फ बीमारी से बचने के लिए नहीं, बल्कि बेहतर दिखने और बेहतर महसूस करने के लिए भी मेडिकल प्रक्रियाओं का सहारा ले रहे हैं।

IMARC Group की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत का मेडिकल एस्थेटिक्स बाजार 2025 में 65.07 करोड़ डॉलर (करीब 6,200 करोड़ रुपये) का था। 2034 तक इसके बढ़कर 133.43 करोड़ डॉलर (करीब 12,700 करोड़ रुपये) तक पहुंचने का अनुमान है। हालांकि इनमें से कई प्रक्रियाएं स्वास्थ्य और जीवन की गुणवत्ता बेहतर कर सकती हैं, लेकिन इन्हें आमतौर पर 'कॉस्मेटिक' या 'ऐच्छिक' (Elective) माना जाता है। यही वजह है कि हेल्थ इंश्योरेंस कंपनियां इनके खर्च का भुगतान नहीं करतीं।

नही मिला इंश्योरेंस का पैसा

असम के लखीमपुर की 35 वर्षीय रूपल बजाज ने 2024 में दिल्ली में SMILE (स्मॉल इंसिजन लेंटिक्यूल एक्सट्रैक्शन) नाम की लेजर आई सर्जरी कराई थी। यह LASIK का एक आधुनिक विकल्प माना जाता है। रूपल बताती है कि डॉक्टरों ने उन्हें बताया था कि यह प्रक्रिया 40 वर्ष की उम्र तक ज्यादा प्रभावी रहती है। चश्मे से छुटकारा पाने के लिए उन्होंने यह सर्जरी करा ली। इस पर करीब 1.2 लाख रुपये खर्च हुए। लेकिन हेल्थ इंश्योरेंस होने के बावजूद उन्हें कोई क्लेम नहीं मिला क्योंकि पॉलिसी में इसे कॉस्मेटिक या ऐच्छिक प्रक्रिया माना गया था।

ज़रूरत या कॉस्मेटिक प्रक्रिया?

इंश्योरेंस कंपनियां यह तय करने के लिए सख्त मानदंड अपनाती हैं कि कोई प्रक्रिया चिकित्सकीय रूप से जरूरी है या केवल सौंदर्य बढ़ाने के लिए कराई जा रही है। बजाज जनरल इंश्योरेंस के कमर्शल चीफ टेक्निकल ऑफिसर अमरनाथ सक्सेना के अनुसार, LASIK सर्जरी तभी कवर हो सकती है जब आंखों की समस्या एक निश्चित मेडिकल सीमा से अधिक हो। उदाहरण के लिए, यदि मरीज का रिफ्रैक्टिव एरर 7.5 डायोप्टर से ज्यादा है, तभी इसे मेडिकल आवश्यकता माना जा सकता है। अन्य मामलों में इसे ऐच्छिक प्रक्रिया समझा जाता है।

मोटापा कम करने पर क्या है नियम?

वजन कम करने के लिए कराई जाने वाली बैरिएट्रिक सर्जरी कुछ शर्तों के साथ इंश्योरेंस में कवर हो सकती है। Policybazaar के हेल्थ इंश्योरेंस बिजनेस हेड सिद्धार्थ सिंघल के मुताबिक, यदि मरीज की उम्र 18 वर्ष या उससे अधिक है और उसका BMI (बॉडी मास इंडेक्स) 40 या उससे ज्यादा है, तो बैरिएट्रिक सर्जरी कवर की जा सकती है। यदि BMI 35 से ज्यादा है और साथ में गंभीर बीमारियां भी हैं, तब भी कवरेज मिल सकता है। इसके लिए डॉक्टर की सिफारिश, जांच रिपोर्ट और पहले किए गए गैर-सर्जिकल वजन घटाने के प्रयासों का रेकॉर्ड देना पड़ता है।

लाखों खर्च, नही मिलता कवरेज

हाल के वर्षों में मोटापा कम करने वाली दवाओं की मांग तेजी से बढ़ी है। ये दवाएं इंजेक्शन के रूप में घर पर ली जा सकती हैं। CARE Ratings की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में एंटी-ओबेसिटी दवाओं का बाजार 1,000 से 1,200 करोड़ रुपये का हो चुका है। डॉ. राजीव कोविल के मुताबिक, पिछले 3-5 वर्षों की तुलना में बड़े शहरों में मेडिकल मोटापा उपचार की मांग 300% से 500% तक बढ़ चुकी है। मोटापा कम करने वाली दवाओं का सालाना खर्च 2 से 3 लाख रुपये तक पहुंच सकता है। डॉक्टरों के अनुसार, जिन लोगों का BMI 27 से अधिक हो और उन्हें डायबिटीज, हाई ब्लड प्रेशर, स्लीप एपनिया या फैटी लिवर जैसी बीमारियां हों, उन्हें ये दवाएं दी जा सकती हैं। BMI 30 से अधिक होने पर भी इनका उपयोग किया जा सकता है। फिर भी अधिकांश हेल्थ इंश्योरेंस पॉलिसियां इन दवाओं का खर्च नहीं उठातीं।

33 वर्षीय सुप्रीथा मंजूनाथा, जो इंस्टाग्राम पर अपनी वेट लॉस जर्नी साझा करती हैं, डायबिटीज के कारण डॉक्टर की सलाह पर एंटी-ओबेसिटी दवा ले रही हैं। उन्होंने अब तक लगभग 55,000 रुपये अपनी जेब से खर्च किए हैं क्योंकि उनकी हेल्थ पॉलिसी इस खर्च को कवर नहीं करती।

क्यों नही मिलता क्लेम?

भारत में सामान्य हेल्थ इंश्योरेंस पॉलिसियां मुख्य रूप से अस्पताल में भर्ती होने वाले इलाज को कवर करती हैं। जिन उपचारों में 24 घंटे अस्पताल में भर्ती रहने की जरूरत नहीं पड़ती, वे अक्सर कवरेज से बाहर रहते हैं। सिद्धार्थ सिंघल के अनुसार, IRDAI के नियमों के तहत वजन कम करने वाली दवाओं को अक्सर 'लाइफस्टाइल' या 'कॉस्मेटिक' उपचार की श्रेणी में रखा जाता है। चूंकि ये दवाएं घर पर ली जाती हैं और अस्पताल में भर्ती होने की जरूरत नहीं होती, इसलिए क्लेम आमतौर पर मंजूर नहीं होता। हालांकि कुछ ऐसी पॉलिसियां है जिनमें OPD (आउट पेशेंट डिपार्टमेंट) लाभ शामिल होते हैं। ऐसे मामलों में सीमित कवरेज मिल सकता है, लेकिन यह अभी बहुत कम देखने को मिलता है।

रूपल बजाज, 35

लखीमपुर, असम

पेशा: प्री-स्कूल मालिक, पेरेंटिंग कोच

ट्रीटमेंट: SMILE विज़न करेक्शन के लिए, दिल्ली में।

खर्च हुई रकम: Rs.1.2 लाख बचत का इस्तेमाल किया क्योंकि उनकी हेल्थ पॉलिसी मे यह प्रोसिजर कवर नही था।

नोट: यह एक मिनिमली इनवेसिव प्रोसिजर था, जिसे LASIK के विकल्प के तौर पर बताया गया था। इससे मुझे अपना चश्मा हटाने मे मदद मिली।

विद्या टीकरी, 54

गुरुग्राम

पेशा: मेकअप आर्टिस्ट

ट्रीटमेंट: चेहरे के शेप को बेहतर बनाने के लिए थ्रेड लिफ्ट।

खर्च हुई रकम: Rs.40,000 खुद से किया।

नोट: मैने थ्रेड लिफ्ट प्रोसीजर चुना, जो स्किन की अंदरूनी परतों को ऊपर खीचकर चेहरे को ज्यादा शेप वाला और जवान दिखाता है। इस प्रोसीजर में लोकल एनेस्थीसिया की जरूरत पड़ी और इसमें करीब 25 मिनट लगे।

दुनिया में क्या है स्थिति?

दुनिया के कई देशो मे मोटापे के इलाज को अब चिकित्सा की दृष्टि से जरूरी माना जाने लगा है। अमेरिका मे कई कंपनियां अपने कर्मचारियो के लिए GLP-1 दवाओं का खर्च कवर कर रही है। यूरोप में भी सीमित सरकारी सहायता मिलती है।

कब मिल सकता है कवरेज?

कुछ विशेष परिस्थितियो मे प्लास्टिक सर्जरी या डेंटल उपचार का खर्च कवर हो सकता है। यदि किसी को जलने, दुर्घटना या कैंसर के कारण ऐसी सर्जरी की जरूरत पड़ती है, तो डॉक्टर की सिफारिश पर इंश्योरेंस कंपनी क्लेम स्वीकार कर सकती है।

कॉस्मेटिक प्रक्रिया के बाद क्या?

कॉस्मेटिक प्रक्रिया के बाद कोई दिक्कत हो गई तो उसका इलाज भी जेब से कराना पड़ सकता है। यदि मूल प्रक्रिया ही इंश्योरेंस मे शामिल नही थी, तो उससे पैदा हुई जटिलताओ का खर्च भी आमतौर पर कवर नही किया जाता।

EMI लेकर इलाज कराएं?

एक्सपर्ट्स का कहना है कि कॉस्मेटिक उपचार या लग्जरी खर्चों के लिए कर्ज लेना समझदारी नही है। बेहतर होगा कि इसके लिए लिक्विड फंड मे SIP करके जरूरी रकम जुटाई जाए।

थ्रेड लिफ्ट का कवर मिलेगा क्या?

गुरुग्राम की विद्या टीकरी ने ₹40,000 खर्च कर थ्रेड लिफ्ट प्रक्रिया कराई। इसमे चेहरे की त्वचा की अंदरूनी परतों को ऊपर खीचकर चेहरा ज्यादा युवा और आकर्षक दिखाने की कोशिश की जाती है। लेकिन, इसका खर्च इंश्योरेंस से नही मिला।

डेंटल ट्रीटमेंट कराया तो?

पॉलिसी मे OPD सुविधा शामिल है, तो कुछ नियोजित डेंटल उपचारो का सीमित कवरेज मिल सकता है। लेकिन दांत सफेद कराने, वेनियर लगवाने या केवल सुंदरता बढ़ाने के लिए कराए जाने वाले ऑर्थोडॉन्टिक उपचार आमतौर पर कवर नही होते।

सीख क्या है?

एक्सपर्ट्स का कहना है कि अभी तक माना जाता रहा है कि हेल्थ इंश्योरेंस का मकसद बीमारी और मेडिकल आपात स्थिति से सुरक्षा देना है, न कि हर तरह के वेलनेस या ब्यूटी ट्रीटमेंट का खर्च उठाना। इसलिए LASIK, बोटॉक्स, थ्रेड लिफ्ट, वजन कम करने वाली दवाएं या अन्य एस्थेटिक प्रक्रियाएं कराने से पहले अपनी पॉलिसी की शर्तो को ध्यान से पढ़ना जरूरी है। यह मानकर न चले कि अस्पताल मे होने वाला हर इलाज इंश्योरेंस से कवर हो जाएगा। कई बार पूरा खर्च आपकी जेब से जाना पड़ सकता है।

जानें, आपका हेल्थ इंश्योरेंस किस इलाज का खर्च उठाएगा

'मेडिकल जरूरत' की कसौटी: *किसी इलाज का खर्च तभी कवर होता है, जब वह:*

- किसी बीमारी या मेडिकल समस्या के इलाज के लिए हो।
- शरीर की सामान्य कार्यक्षमता को बचाने या वापस लाने में मदद करे।
- स्वास्थ्य को गंभीर रूप से बिगड़ने से रोकता हो।
- डॉक्टर की सलाह और मेडिकल प्रमाणों पर आधारित हो।

केवल सुंदरता बढ़ाने वाले इलाज: *ऐसे इलाजों का खर्च हेल्थ इंश्योरेंस आमतौर पर नही देता:*

- थ्रेड लिफ्ट
- स्किन गोरी या चमकदार बनाने के ट्रीटमेंट
- मुस्कान या दांतों की खूबसूरती बढ़ाने वाले कॉस्मेटिक ट्रीटमेंट

हेयर ट्रांसप्लांट: *अगर इलाज का मुख्य मकसद है...*

- सिर्फ रूप-रंग बेहतर बनाना
- उम्र बढ़ने के असर को कम दिखाना
- बिना किसी मेडिकल जरूरत के लुक्स में सुधार करना तो हेल्थ इंश्योरेंस उसका खर्च नही देता।